सूर्यबाला की कहानी में अभिव्यक्त वृद्ध जीवन का द्वंद्व : समस्याएं और समाधान
(विशेष संदर्भ: 'बाऊजी और बंदर' तथा 'दादी और रिमोट')

कोमल कुमारी

शोध सार :

"हम खुद को बरगद बनाकर
जमाने भर को बाँटते रहे
मेरे अपने ही हर दिन
मुझको थोड़ा-थोड़ा काटते रहे।"[1]

ये है आज के समय का वृद्ध जीवन। हिंदी साहित्य में जहां एक ओर दलित जीवन, स्त्री जीवन, आदिवासी जीवन, किन्नर जीवन के बाद अब वृद्ध जीवन की भी धमक सुनाई देने लगी है। भारतीय परंपरा में बुजुर्गों को परिवार के छायादार वृक्ष के रूप में देखने की परंपरा रही है। वृद्ध व्यक्तियों की सामाजिक सुरक्षा की जिम्मेदारी परिवार के सदस्यों की होती है परंतु आज स्थितियां बदल रही है, मूल्य बदल रहे हैं। पारिवारिक ढांचा में बदलाव के कारण बुजुर्गों की समस्याएं दिन-प्रतिदिन बढ़ती चली जा रही है। नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के विचारों में असमानता से तनाव की स्थिति उत्पन्न हो रही है। अचानक आए परिवर्तन को पुरानी पीढ़ी स्वीकार नहीं कर पा रहे हैं,इसलिए वह आक्रोशित व कुंठित होते रहते हैं। समाज तथा नई पीढ़ी ने वृद्ध व्यक्तियों को अनुपयोगी ,नकारा एवं निरर्थक सिद्ध कर दिया है। इन्हीं सारी समस्याओं का मूल्यांकन करना तथा उनके लिए उचित समाधान निकालना ही इस शोध पत्र का उद्देश्य है।

बीज शब्द: वृद्धावस्था, कमज़ोरी, वृद्ध, परायापन, बुजुर्ग, अकेलापन।

मूल आलेख: सच ही कहा गया है साहित्य समाज का दर्पण है। साहित्य में जो भी कुछ घटित होता है , उसकी परछाई हमें साहित्य के पन्नों में साफ नज़र आती है। प्राचीन काल से ही साहित्य में वृद्ध व्यक्तियों को स्थान दिया गया है। समाज के विभिन्न पक्षों को कथाकार सूर्यबाला जी उभारती चलती है। सूर्यबाला जी का जन्म 25 अक्टूबर सन् 1944 को वाराणसी में हुआ। इन्होंने अपने जन्मस्थल का सुंदर वर्णन अपनी बहुत सी कहानियां में किया है। साठोत्तरी महिला कथाकार में सूर्यबाला जी का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। मालती जोशी, मन्नू भंडारी, मृदुला गर्ग, कृष्णा सोबती आदि महिला कथाकारों की बात की जाए तो इनमें से सूर्यबाला जी ऐसी साहित्यकार हैं जिन्होंने नारी समस्याओं को अपनी रचनाओं में चित्रित किया है। सूर्यबाला जी कई विधाओं में साहित्य की रचना की है। उनके कहानी संग्रह हैं ; इक्कीस कहानियाँ, पाँच लम्बी कहानियाँ, मुंडेरे पर (1980),साँझवती (1985), यामिनी कथा (1991), गृह प्रवेश (1992), मानुष गंध (2003)।

भारतीय परंपरा में माता-पिता को ईश्वर के समान मानने की प्रथा है। 'मातृदेवोभव', 'पितृदेवोभव', 'अतिथिदेवोभव' की अवधारणा प्राचीन काल से ही प्रचलित है। भारत में वृद्धों के लिए एक शब्द है - वृद्ध। वृद्ध शब्द का प्रयोग व्यक्ति की सर्वोच्च उपलब्धियां को दर्शाने के लिए किया जाता है। "वृद्धावस्था जीवन प्रत्याशा के करीब और उससे अधिक व्यक्तियों के लिए आयु की सीमा है। वृद्ध लोगों को इन नामों से भी जाना जाता है: बूढ़े लोग, बुज़ुर्ग, बुजुर्ग, वरिष्ठ नागरिक, वरिष्ठ नागरिक या अधिक उम्र के वयस्क।" पौराणिक ग्रंथों में भगवान गणेश,भगवान राम और श्रवण कुमार जैसे आदर्शों को देखें तो हमें उनके कर्तव्यों को देख उनसे प्रेरणा ग्रहण करनी की आवश्यकता है। हिंदी साहित्य की बहुचर्चित कथाकार सूर्यबाला जी है। इनकी ज्यादातर रचनाएं मानवीय संवेदना से ओत-प्रोत है। सूर्यबाला जी अपनी कहानियों के द्वारा वृद्ध जीवन की समस्याएं तथा उनकी त्रासदी और छटपटाहट को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करती है। इसी क्रम में वृद्ध जीवन से संबंधित कहानियां के अंतर्गत निर्वासित, दादी और रिमोट, जश्न, चिड़िया जैसी मां, सांझवती, बाऊजी और बंदर द्रष्टव्य है। प्रस्तुत शोध पत्र में 'बाऊजी और बंदर' और 'दादी और रिमोट' कहानी को विशेष संदर्भ के रूप में लिया गया है। वृद्ध जीवन की आहट हमें उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की बूढ़ी काकी, भीष्म साहनी (चीफ की दावत), ज्ञानरंजन (पिता), काशीनाथ सिंह (अपना रास्ता लो बाबा), उदय प्रकाश (छप्पन तोले का करधन), चित्रा मुद्गल (गेंद) में भी देखने को मिलती है।

'बाऊजी और बंदर' यह वृद्ध जीवन से संबंधित कहानी है। इस कहानी के केंद्र में बाऊजी हैं जिनके इर्द-गिर्द कहानी घूमती है। ललित की मां की मृत्यु के उपरांत बाऊजी अकेले रह जाते हैं। अकेलेपन से छुटकारा पाकर वह (बाऊजी) अपने बेटे ललित के पास शहर आते हैं परंतु बेटे-बहु को बाऊजी का घर आना अच्छा नहीं लगता। बहु की स्वार्थी मानसिकता के कारण बाऊजी का उपयोग किया जाता है। उन्हें बंदर भगाने के लिए काम पर रखा जाता है। यह कहानी वृद्ध जीवन का जीता जागता दस्तावेज है। कहानी का प्रारंभ ही इस पंक्ति से होता है -"बाऊजी फिर आ रहे हैं। उन्हें फिर से बच्चों की बहुत याद आ रही है।"[2] यहां यह द्रस्टव्य है कि बाऊजी के आगमन को एक बोझ के रूप में देखा गया है। कहानी की तीसरी पंक्ति से स्पष्ट है-"सुनते ही मैंने सिर कूट लिया।"[3] यह कितनी भारी विडंबनापूर्ण स्थिति है की माता-पिता अपने पुत्र का हाल समाचार जानने के लिए भी उन्हें अपनी उपयोगिता सिद्ध करनी पड़ती है। इस कहानी में पिता-पुत्र संबंध, पिता-पुत्रवधू संबंध, दादा-पोते का संबंध दिखाया गया है। बाऊजी अपने पोते-पोती से मिलने आते हैं तब ललित और उनकी पत्नी कोई न कोई बहाना बनाकर उन्हें वापस गांव भेजने की तैयारी में जुट जाते हैं। बाऊजी कहते हैं-"अब तो पका-पकाया फल हूँ, अब गिरा कि तब। पता नहीं इस जिन्दगी में बच्चों के चेहरे देख भी पाऊँगा या नहीं। अकेले आना-जाना भी तो अब अपने बस का नहीं...हाथ-पैर बेकार होते जा रहे हैं। वह तो बहू सयानी है कि घर-गाँव, खेत-खलिहान की सुध लेने की सलाह दी।"[4] मानव का एक गुण है-स्वार्थ। इस कहानी में बहु स्वार्थी है ,बहु अपने ससुर (बाऊजी) से परेशान है क्योंकि बहुत जद्दोजहद कर उन्होंने बाऊजी को गांव भेजा था परंतु वे फिर आ गए। घर पर ससुर की कितनी इज्जत है इसका अंदाजा इन पंक्तियों से स्पष्ट है-"पता नहीं ये बूढ़े लोग मोह-माया का इतना ओवर-स्टॉक क्यों भरे रहते हैं अपने दिल में? जब देखो तब उलीचने को तैयार। इनके दिल न हुए मोह-माया के दलदल हो गए, जीना हराम!"[5] नौकर के काम में बाऊजी की उपयोगिता ढूंढी जाती है। चन्द्रमौलेश्वर प्रसाद लिखते हैं- "बुढ़ापे को एक नई दृष्टि से देखने की आवश्यकता है, एक ऐसी दृष्टि से

जिसमें संवेदना हो और बूढ़ों के लिए आदर व सम्मान का जीवन देने की आकांक्षा हो।"[6] बाऊजी के आगमन से ललित और उनकी पत्नी परेशान तो हैं परंतु उनका घर के काम में किस तरह से उपयोग किया जा सके इसकी योजना बनाई जा रही है। ललित कहता है-"अब जब आ ही रहे हैं तो मन के संतोष के लिए ही सही, बाऊजी का कुछ तो उपयोग हो। उनके यहाँ रखने, रहने के एवज में कोई तो सहूलियत...लेकिन यहाँ तो माली भी आता है।"[7] ज्यादातर वृद्ध परिवार से अपनापन पाने के लिए कुछ भी कर गुजरने को तैयार हैं। बाऊजी जब शहर आए ,उनके पोते-पोती शानू और शौनक ने आते ही उन्हें छड़ी दिखाई- "जानते हैं यह क्या है? यह छड़ी है, मम्मी ने रखी है आपके लिए...।" "हाँ...।" बाऊजी सिर हिलाते प्रसन्नचित्त छड़ी का मुआयना करने लगे, "इसे लेकर टहलने जाया करूँगा...कभी-खभी कुत्ते लग जाते हैं...पीछे...।" "दुत्त। कुत्तों को मारने के लिए थोड़ी न। बन्दरों को भगाने के लिए...इससे आप बन्दरों को भगाया करेंगे।"[8] इनकी बातों से बाऊजी के हृदय को आघात पहुंचता है। बाऊजी बंदरों से डरते थे परंतु फिर भी बंदर भगाने के लिए तैयार हो जाते हैं। जब बाऊजी इस कार्य में असमर्थ हो जाते तो उन्हे गांव वापस जाने की धमकी दी जाती-"इतना डरते हैं तो जाएँ वापस गाँव...और उड़ाएँ जाकर खेत में चील-कौव्वे...हमारे किस काम के। वही कहावत कि..."[9] उन्हें ठेस तो पहुंचती थी परंतु बच्चों के प्यार के लालच में सहन कर लेते थे। बाऊजी के प्रति जो बहु का रवैया वह कुछ हद तक ठीक नहीं था। बहु का बाऊजी को लेकर अमानवीय व्यवहार को दिखाने का प्रयास किया गया है-"नाश्ता-खाना उन्हें दिया नहीं जाता, उनके सामने डाल दिया जाता।"[10] परिवार में वृद्ध व्यक्तियों की यही स्थिति आज भी बनी हुई है। अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए बाऊजी ने बंदरों से दोस्ती कर लेते है।

'दादी और रिमोट' कहानी के केंद्र में वृद्ध दादी है। वृद्ध दादी को गाँव से शहर लाने की योजना बनाई जाती है। कहानी में वृद्ध दादी , बेटा-बहु और उनके दो बच्चे पात्र के रूप में उपस्थित हैं। जंगबहादूर नामक एक रसोइया भी है। सम्पूर्ण कहानी वृद्ध दादी का बेटे के घर में लिए गए अनुभव को व्यक्त करती है। दादी पूरे दिन घर में अकेले रहती है, उसका बेटा ऑफिस के काम के लिए निकल जाता, बहु स्कूल में पढाने चली जाती, पोते-पोती स्कूल पढ़ने चले जाते हैं। दादी अपना दिन कमरे में टेलिविज़न (पेटी) देखकर बिताती हैं। जब दादी पहली बार टीवी पर हिंसक छवियाँ देखती हैं तो वे सहम जाती और बेहोश हो जाती हैं। इस घटना के बाद बेटा फैसला लेता है अगर उन्हे टीवी से डर लगता है, तो कमरे से टीवी को निकाल देना चाहिए। दादी का एकमात्र साथी टीवी ही हैं, जिससे उनका मन लगा रहता है। पड़ोसी बहु को सुझाव देती हैं की उन्हे (दादी) को सुबह का कार्यक्रम दिखाया जाए, जिसमे एक गुरु उपदेश देता है। कुछ दिनों बाद दादी टीवी देखना बंद कर देती है परंतु अकेलापन उन्हे कांटने को दौराता था। टीवी पर दिखाए जाने वाले सभी हिंसाओं पर दादी ने प्रतिक्रिया देना बंद कर दिया। दादी स्वयं को अपने कमरे तक ही सीमित कर लेती हैं। कहानी का प्रारंभ हीं इस पंक्ति से होता है- "चूँकि इसके सिवा अब कोई चारा नहीं था... इसलिए गाँव से दादी ले आई गई। हिलती-डुलती, ठेंगती-ठेंगाती। लाकर, ऊँची इमारतों वाले शहर के, सातवें माले पर, पिंजरे की बूढ़ी मैना-सी लटका दी गई।"[11] इन पंक्तियों से यह स्पष्ट है कि दादी का गाँव से शहर आना उनकी मर्जी से नहीं हुआ है ,बल्कि उन्हे जबरन लाया गया है। पिंजरे की बूढ़ी मैना की भांति सातवें माले पर लटका दिया जाता है। दरअसल ,बेटे को गाँव से जो पत्र मिला है ,उसमे बुजुर्ग माता-पिता को लेकर कर्तव्यों का जिक्र किया गया है- "आगे समाचार यह है कि आपकी माँ को सहेर जाने के लिए हम लोगों ने राजी कर लिया है। अब आप फौरन से पेस्तर आओ और 'डाइरीक्ट' लिवा ले

जाओ। अपनी जमीवारी सँभालो। काहे से कि आप जान लो, उमिर और बुढ़ाया शरीर अब पूरी तरह पक के चू पड़ने को है लेकिन मानतीं फिर भी नहीं। टोले-पड़ोस का हेत-हवाल लेने, गिरती-भहराती हर कहीं पहुँच जाती हैं। दो-तीन मर्तबा तो ऊँचे-खाले लुढ़क भी चुकी हैं। अब महलम-पट्टी और डॉक्टर-वैद का उतना सरंजाम हमारे बस का कहाँ?"[12] इस पत्र के माध्यम से गाँव वाले बेटे को सुझाव दे रहे है। सीमा दीक्षित लिखती है- "कई बार यह देखा गया है कि बहुत कम उम्र के लोग भी अपने को बुजुर्ग कहलाना पसंद करते हैं, जबकि बहुत से लोग जो बुजुर्ग होकर भी उम्र की चुनौतियों को हर क्षण खारिज करने में लगे रहते हैं। समस्या उनकी नहीं हैं, जिन्होंने उम्र से भिड़ना सीखा है, बल्कि समस्या उनकी है, जो एक संख्या को उम्र और एक उम्र को बुजुर्गियत मानकर चलते हैं।"[13] दादी के रहने का प्रबंध बेटे ने पहले से कर रखा था। उनके लिए एक कोठरी का प्रबंध किया गया था, जिसका वर्णन इस प्रकार किया गया है- "इन्तजाम पहले से था। साफ-सुथरा, चाटा-पोंछा घर। एक कोने में उनकी कोठरी। पर्दे ढकी खिड़की, तिपाई, जग। जग में पानी और तिपाई पर बिस्कुट का पाकिट भी और तो और, नकी खाट के ऐन सामने एक छोटा टी.वी. भी।"[14] दादी ने जब पहली बार टीवी पर कार्यक्रम देखा वे आश्चर्यचकित हो गयी ,ऐसा मानो जैसे उनके हाथों अलादीन का चिराग लग गया हो- "बेटे के बेटे ने पुट्ट से रिमोट की बटन दबा दी। दादी हकबकाई, भौचक...जैसे यक्ष-किन्नर, नाग-गन्धर्व, तीनों लोक, चौदहों भुवन से लेकर सम्पूर्ण ब्रह्मांड डाँवाडोल हो इस चौखूँटी 'पेटी' (बक्से) में। हरिणाकुश से लेकर गौरा-पार्वती तक। जय जगदंबे! दादी निहाल हो लीं। बच्चों की तरह रिमोट हाथ में लेकर किलक उठीं। जैसे अलादीन का चिराग हाथ लग गया हो। फिर लजाईं।"[15] इतनी बड़ी बिल्डिंग परंतु उनसे बात करने वाला कोई नहीं। वे अकेले चुपचाप अपनी कोठरी में बैठी रहती या टीवी देखती। परिवार के सदस्य इनको पर्याप्त समय नहीं दे पाते- "घर के लोग अपने-अपने समय पर आते-जाते। आपस में थोड़ी-बहुत बातचीत करते, अपने काम में मशगूल हो जाते। दादी उनके आसपास कहीं न कहीं बैठने-उठने, चलने-फिरने की कोशिश करती रहतीं। फिर थककर अपनी कोठरी में आकर रिमोट की बटन दबा देतीं।"[16] दादी रिमोट से हिंसा का बटन हटाना चाहती है, मासूमियत से पूछती हैं- "गोली-बारूद वाली बटन निकाल दो। जान थोड़ेई देनी है। मैंने तो राधेकृष्ण के लिए बटन दबाई थी...भगवान लोग अब क्यों नहीं आते?"[17] बेटा अपनी माँ पर क्रोध प्रकट करते बेटा कहता है अगर आप हिंसक कार्यक्रम को देख डरती हैं तो टीवी देखने के बजाय प्रार्थना करने, माला जपने का सुझाव देता है- "निकाल बाहर करो टी.वी. उनकी कोठरी से वरना हमारी गैरहाजिरी में कुछ हो-हवा गया तो कौन जिम्मेवार होगा? ऐं? नहाना-धोना, खाना-पीना, पूजा-पाठ, इतना काफी नहीं क्या? बाकी समय चुपचाप माला जपें, बस।"[18] दादी के लिए एक मात्र सहारा या साथी है उनकी ये 'पेटी'। खाली समय में टीवी का कार्यक्रम देख उनका बीता वक्त गुजरता है- "पूरे समय दिल धड़कता रहा। बस, अब कोई आया 'पेटी' उठाके ले जाने। कहीं कुंडा खड़कता, जान मुँह को आ जाती। अच्छा हो या बुरा, समय काटने का साथी तो है न! चला जाएगा तो क्या करेंगी दिन-भर? ले-दे के वही एक खिड़की...जिसके बगल वाली बिल्डिंग पर कफ्फन-सी सपाट दीवाल के सिवा कुछ दिखता ही नहीं। लगता है, जैसे ऊँची उठती दीवाल के बीच चिन दी गई हों।"[19] टीवी देख दादी पहले खुश होती हैं ,परंतु मार-पीट,दंगा, गोली यह देख इसको सच्चाई माँ बैठती है और रोने लगती है। इस घटना पर बहु प्रतिक्रिया व्यक्त करती है- "जब समझतीं नहीं तो देखना काहे का। सब कुछ सच मान लेती हैं।"[20] दादी को संवेदनशील से संवेदनशून्य बनाने में कहीं न कहीं पूरा परिवार कामयाब हो ही जाता है- "अब वे जबरदस्ती के 'सिली' सवालों

से किसी को परेशान भी न करतीं। उलटे कभी-कभार बात चलने पर, किस प्रोग्राम को कितने हजार चिट्ठियाँ मिलीं या क्या-क्या कीमती चीजें इनाम में थीं, या साबुन-तेल वाली छोकरियाँ कैसी घाघरी, कैसा जंपर पहने थीं, यह भी बतातीं। बड़ों और बच्चों दोनों के लिए दादी से मिली ये ज्ञानवर्द्धक सूचनाएँ अतिरिक्त मनोरंजन का माध्यम हो गईं और उन्होंने अब दादी को 'टेलीविजन इन्फॉर्मेशन ब्यूरो' के नाम से पुकारना शुरू कर दिया।"[21]
कहानी में निर्णायक मोड़ तब आता है जब उस अपार्टमेंट के पास एक 28 साल के युवक की हत्या हो जाती है फिर भी दादी इस भयंकर खबर को सुन बहुत उदासीन प्रतिक्रिया देती हैं।

समस्या एवं समाधान : वृद्धावस्था जीवन प्रक्रिया का अंतिम चरण माना जाता है। इस अवस्था में बुजुर्गों को अनेक समस्याएं घेर लेती हैं। नई पीढ़ी के विचार पुरानी पीढ़ी से मेल नहीं खाते जिसके कारण वैचारिक टकराहट की स्थिति उत्पन्न होती है। वृद्धों की समस्याओं की बात की जाए तो उनकी सबसे विकट समस्या है; अकेलेपन की समस्या, मानसिक समस्या, शारीरिक समस्या, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, आर्थिक समस्या, घर व समाज में अनादर की समस्या, पारिवारिक व सामाजिक समस्या। भूख न लगना, नींद कम आना, शारीरिक दर्द से परेशानी, आंखों से कम दिखाई देना वृद्धावस्था में अनेक समस्याएं होती हैं। इन समस्याओं के कारण है संयुक्त परिवार का टूटना, अर्थ की कमी, स्वार्थ प्रवृत्ति, नई व पुरानी पीढ़ी के विचारों में टकराव।

समाधान:

(i) वृद्धों का सम्मान करें, स्वार्थी व मतलबी होना छोड़ दें, जिससे संयुक्त परिवार न टूटे।

(ii) वृद्धों को उचित समय दें ताकि हम उनके अकेलेपन को दूर कर सकें।

(iii) संयुक्त परिवार से ही संस्कारों का जन्म होता है, जहां बच्चों का लालन-पालन अच्छे से होता है बच्चों के साथ-साथ वृद्ध व्यक्तियों का अंतिम समय प्रेम, शांति व खुशी से गुज़रता है।

(iv) वृद्धों को आर्थिक रूप से सक्षम और शारीरिक रूप से मजबूत रहने की योजना बनानी होगी।

निष्कर्ष: भारतीय समाज एक ऐसा समाज है जहां एक ओर पश्चिमीकरण का विकास हुआ वहीं दूसरी ओर वृद्धों की समस्याएं बढ़ी है। आज का समाज वृद्धावस्था को सम्मान पूर्वक दृष्टि से नहीं देखना चाहता। क्षरित होते मानवीय मूल्य, मानवीय मूल्यों का पतन होना, मूल्यों में बदलाव के कारण भी युवा पीढ़ी पुरानी पीढ़ी के भाव एवं विचारों को समझ नहीं पा रहे हैं। वृद्धावस्था में वृद्ध व्यक्तियों के भीतर अकेलापन, संत्रास, भय, असुरक्षा आदि घेर लेते हैं। वास्तव में उन्हें सुरक्षा व स्नेह की आवश्यकता है ताकि उनके अकेलेपन को दूर किया जा सके। सूर्यबाला जी अपनी कहानियों के माध्यम से समकालीन समय की सबसे विकट समस्या वृद्धों की समस्याओं से पाठकों को अवगत कराती चलती है। कहानियों के पात्रों द्वारा वृद्ध जीवन की समस्याओं को समझने का प्रयास किया गया है। बुजुर्गों के माध्यम से जो अनुभव और ज्ञान की प्राप्ति होती है उसे हमें आत्मसात करने की जरूरत है ताकि समाज की भलाई के लिए उपयोग में लाया जा सके। जिससे आगे आने वाली युवा पीढ़ी वृद्धावस्था एवं वृद्ध जीवन की समस्याओं को बेहतर ढंग से समझ पाए।

संदर्भ :

1. प्रसाद, राजेंद्र, अनमोल सूक्तियाँ, प्रभात प्रकाशन, 2024
2. सूर्यबाला, प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ सं-131
3. वही, पृष्ठ सं-131
4. वही, पृष्ठ सं-131
5. वही, पृष्ठ सं-132
6. प्रसाद, चन्द्रमौलेश्वर, वृद्धावस्था विमर्श, परिलेख प्रकाशन, नजीबाबाद, प्रथम संस्करण 2016
7. सूर्यबाला, प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ सं-133
8. वही, पृष्ठ सं-134
9. वही, पृष्ठ सं-138
10. वही, पृष्ठ सं-139
11. वही, पृष्ठ सं-118
12. वही, पृष्ठ सं-118
13. दीक्षित, सीमा, वृद्धावस्था की दस्तक, सामयिक बुक्स प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2016, पृष्ठ सं-13
14. सूर्यबाला, प्रतिनिधि कहानियां, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2022, पृष्ठ सं-118,119
15. वही, पृष्ठ सं-119
16. वही, पृष्ठ सं-119
17. वही, पृष्ठ सं-120
18. वही, पृष्ठ सं-120
19. वही, पृष्ठ सं-120
20. वही, पृष्ठ सं-122
21. वही, पृष्ठ सं-123

कोमल कुमारी (शोधार्थी)
हिंदी विभाग, मानविकी संकाय
इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
email: komal7152@gmail.com